दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास

दि. 20 फ़रवरी, 2021

राष्ट्रभाषा विशारद उत्तरार्द्ध–1

RASHTRABHASHA VISHARAD UTTARARDH–1

समय : 3 घंटे] **[पूर्णांक : 100**

1. संदर्भ सहित व्याख्या कीजिएः- **40**

अ) निज भाषा उन्नति अहै सब उन्नति को मूल।
बिन निज भाषा ज्ञान के मिटत न हिय को सूल।।
अँगरेजी पढ़ि के जदपि सब गुन होत प्रबीन।
पै निज भाषा ज्ञान बिन रहत हीन के हीन।।

(या) निर्भय स्वागत करो मृत्यु का
मृत्यु एक है विश्राम-स्थल
जीव जहाँ से फिर चलता है
धारण कर नव-जीवन-संबल
मृत्यु एक सरिता है, जिसमें
श्रम से कातर जीव नहाकर
फिर नूतन धारण करता है
काया-रूपी वस्त्र बहाकर ।।

आ) काली तू, रजनी भी काली,
शासन की करनी भी काली,
काली लहर कल्पना काली,
मेरी काल कोठरी काली,
टोपी काली, कमली काली,
मेरी लौह- शृंखला काली,
पहरे की हुंकृति की ब्याली,
तिस पर है गाली, ऐ आली!

(या) अनुनय विनय नहीं सुनता है, विकट फ़िरंगी की माया,
व्यापारी बन दया चाहता था जब यह भारत आया,
डलहौज़ी ने पैर पसारे अब तो पलट गई काया,
राजाओं नव्वाबों को भी उसने पैरों ठुकराया,

इ) न गर्मी जलाती थी ऐसी न सर्दी
मुझे यार जैसा जला जानता है
मेरे दिल में रहता है तू ही तभी तो
जो कुछ दिल का है मुद्दआ जानता है
जहाँ 'मीर' आशिक़ हुआ ख़्वार ही था
ये सौदाई कब दिल लगा जानता है

(या) याँ आदमी पै जान को वारे है आदमी।
और आदमी पै तेग को मारे है आदमी।
पगड़ी भी आदमी की उतारे है आदमी।
चिल्लाके आदमी को पुकारे है आदमी।
और सुनके दौड़ता है सो है वह भी आदमी।।

ई) मन मस्त हुआ तब क्यों बोले
हीरा पायो गाँठ गठियायो, बार-बार वाको क्यों खोले।
हलकी थी जब चढ़ी तराजू, पूरी भरी तब क्यों तोले।
सुरत कलारी भई मतवारी, मदवा पी गयी बिन तोले।
हंसा पाये मानसरोवर ताल-तलैया क्यों डोले।
तेरा साहब है घट माँही, बाहर नैना क्यों खोले।
कहै कबीर सुनो भाई साधो, साहब मिलि गये तिल ओले।।

(या) अब मैं नाच्यो बहुत गुपाल।
काम क्रोध को पहिरि चोलना कंठ विषय की माल।
महामोह को नूपुर बाजत निंदा शब्द रसाल।
भरम भये मन भयो पखावज चलत कुसंगति चाल।
तृष्णा नाद करत घट भीतर नाना विधि दै ताल।
माया को कटि फेंटा बाँध्यो, लोभ तिलक दै भाल।
कोटिक कला काछि दिखरायी, जल थल सुधि नहीं काल।
सूरदास की सबै अविद्या दूर करौ नंदलाल।

उ) तेरह वर्ष व्यतीत हो चुके,
पर है मानो कल की बात,
वन को आते देख हमें जब
आर्त अचेत हुए थे तात।
अब वह समय निकट ही है जब
अवधि पूर्ण होगी वन की,
किन्तु प्राप्ति होगी इस जन को,
इससे बढ़कर किस धन की?

(या) थी अत्यन्त अतृप्त वासना
दीर्घ दृगों से झलक रही,
कमलों की मकरन्द-मधुरिमा
मानो छवि से झलक रही।
किन्तु दृष्टि थी जिसे खोजती
मानो उसे पा चुकी थी,
भूली-भटकी मृगी अन्त में
अपनी ठौर आ चुकी थी।।

2. चरण का बिना भंग किये किन्हीं चार दोहों को पूरा कीजिए:- **10**

1) जो जल ..... कौ काम।।

2) हाड़ बड़ा ..... फल येहु।।

3) रूखा सूखा ..... ललचावे जीव।।

4) रहिमन प्रीति ..... सपेदी चून।।

5) रहिमन जिह्वा ..... खात कपाल।।

6) देनहार कोउ ..... नीचे नैन।।

3. कवि परिचय देते हुए किसी एक कविता का सारांश लिखिए:- **15**

1) स्वदेश प्रेम 2) वीर–पूजा 3) कैदी और कोकिला

4. किसी एक कविता का सारांश लिखिए:- **10**

1) तेरे बंदे हैं हम खुदा जानता है 2) लायी हयात, आये 3) परिंदे की फ़र्याद

5. पंचवटी के आधार पर 'लक्ष्मण' का चरित्र चित्रण कीजिए।

(या)

पंचवटी के आधार पर 'शूर्पनखा'का चरित्र चित्रण कीजिए। **15**

6. पंचवटी के आधार पर 'सीता' पर टिप्पणी लिखिए।

(या)

पंचवटी के आधार पर 'राम' पर टिप्पणी लिखिए। **10**

~~~~~~~~~
~~~~~~~~~